Shri Shivashtakam 5

श्रीशिवाष्टकम् ५

Document Information

Text title : shivAShTakam 5

File name : shivAShTakam5.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc_shiva

Proofread by : Ganesh Kandu

Description/comments : From Shivastotraratnakara, Gita press

Latest update : October 1, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 22, 2022

sanskritdocuments.org

श्रीशिवाष्टकम् ५

पुरारिः कामारिर्निखिलभयहारी पशुपति-
र्महेशो भूतेशो नगपतिसुतेशो नटपतिः ।
कपाली यज्ञाली विबुधदलपाली सुरपतिः
सुराराध्यः शर्वो हरतु भवभीतिं भवपतिः ॥ १॥

हे पुर नामक राक्षसको नष्ट करनेवाले पुरारि तथा कामको भस्म करनेवाले कामारि! आप सभी प्रकारके भयको नष्ट करनेवाले हैं । आप जीवोंके स्वामी, महान ऐशवर्यसम्पन्न, भूतगणोंके अधिपति, पर्वतराज हिमालयको पुत्री पार्वतीके ईश तथा नटेश्वर हैं । आप कपाल धारण करनेवाले, यज्ञस्वरूप, देवसमुदायके पालक तथा देवताओंके स्वामी हैं । देवोंके आराध्य एवं संसारके स्वामी भगवान शर्व! आप संसारके भयका हरण कर लेम् ॥ १॥

शये शूलं भीमं दितिजभयदं शत्रुदलनं
गले मौण्डीमालां शिरसि च दधानः शशिकलाम् ।
जटाजूटे गङ्गामघनिवहभङ्गां सुरनदीं
सुराराध्यः शर्वो हरतु भवभीतिं भवपतिः ॥ २॥

आपके हाथोंमें शत्रुओं एवं दैत्योंका संहार करनेवाला भयावह त्रिशूल सुशोभित हो रहा है । आप गलेमें मुण्डोंको माला और सिरपर चन्द्रकलाको धारण किये हुए हैं । आपको जटाओंमें पापोंको नष्ट करनेवाली देवनदी गंगा सुशोभित हो रही हैं । देवोंके आराध्य एवं संसारके स्वामी भगवान शर्व ! आप संसारके भयका हरण कर लेम् ॥ २॥

भवो भर्गो भीमो भवभयहरो भालनयनो
वदान्यः सम्मान्यो निखिलजनसौजन्यनिलयः ।

शरण्यो ब्रह्मण्यो विबुधगणगण्यो गुणनिधिः
सुराराध्यः शर्वो हरतु भवभीतिं भवपतिः ॥ ३॥

आप सबको उत्पन्न करनेवाले, पापको भूँज डालनेवाले, दुष्ट जनोंको डरानेवाले तथा संसारके भयको दूर करनेवाले हैं । आपके ललाटपर नेत्र सुशोभित है । आप दान देनेमें बड़े उदार, सम्मान्य और सभी लोगोंके लिये सौजन्यधाम हैं, आप शरण्य (शरणागतको रक्षा करनेवाले) , ब्रह्मण्य (ब्राह्मणोंको रक्षा करनेवाले) , देवगणोंमें अग्रगण्य और गुणोंके निधान हैं । देवताओंके आराध्य एवं संसारके स्वामी भगवान शर्व ! आप संसारके भयका हरण कर लेम् ॥ ३॥

त्वमेवेदं विश्वं सृजसि सकलं ब्रह्मवपुषा
तथा लोकान् सर्वानवसि हरिरूपेण नियतम् ।
लयं लीलाधाम त्रिपुरहररूपेण कुरुषे
त्वदन्यो नो कश्चिज्जगति सकलेशो विजयते ॥ ४॥

ब्रह्माके रूपमें आप ही इस सारे विशवकी रचना करते हैं, विष्णुरूपमें इन सभी लोकोंको रक्षा भी निश्चितरूपसे आप ही करते हैं और हे लीलाधाम ! त्रिपुरहरके रूपमें आप ही इस संसारका प्रलय भी करते हैं । संसारमें आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है, जो सबसे अधिक उत्कृष्ट (सकलेश) कहा जा सके । आपको जय हो ॥ ४॥

यथा रज्जौ भानं भवति भुजगस्यान्धकरिपो
तथा मिथ्याज्ञानं सकलविषयाणामिह भवे ।
त्वमेकश्चित्सर्गस्थितिलयवितानं वितनुषे
भवेन्माया तत्र प्रकृतिपदवाच्या सहचरी ॥ ५॥

हे अन्धकासुरके नाशक ! इस संसारमें सभी विषयोंका ज्ञान वैसे ही झूठा है, जैसे रज्जुमें सर्पका ज्ञान । आप ही सृष्टि, स्थिति और प्रलयके विस्तारमें एकमात्र मूलकारण हैं । प्रकृति कहलानेवाली माया इस कार्यमें केवल आपकी सहायिका ही जान पड़ती है ॥ ५॥

प्रभो साऽनिर्वाच्या चितिविरहिता विभ्रमकरी
तवच्छायापत्त्या सकलघटनामञ्चति सदा ।
रथो यन्तुर्योगाद् व्रजति पदवीं निर्भयतया
तथैवासौ कत्री त्वमसि शिव साक्षी त्रिजगताम् ॥ ६॥

हे प्रभो! आपकी वह (माया) अनिर्वचनीय है (इसे न सत् कहा जा सकता है और न असत) , इसमें चैतन्यका अभाव है । यह भ्रम उत्पन्न करनेवाली है । आपकी सहायता पाकर वह सम्पूर्ण घटनाएँ वैसे ही घटाया करती हैं, जैसे जड़ रथ अपने गन्तव्यतक निर्भय दौड़ता दिखायी देता है, किंतु उसके दौड़नेमें सारथिकी सहायता रहती है । इसी प्रकारसे यह माया भी कर्त्री दिखायी देती है। हे शिव! आप ही तीनों लोकोंके साक्षी हैं ॥ ६॥

नमामि त्वामीशं सकलसुखदातारमजरं
परेशं गौरीशं गणपतिसुतं वेदविदितम् ।
वरेण्यं सर्वज्ञं भुजगवलयं विष्णुदयितं
गणाध्यक्षं दक्षं प्रणतजनतापार्तिहरणम् ॥ ७॥

आप ईश हैं, समस्त सुखोंको देनेवाले हैं, अजर हैं, परात्पर परमेश्वर हैं । आप पार्वतीके पति हैं, गणेशजी आपके पुत्र हैं। आपका परिचय वेदोंके द्वारा ही प्राप्त होता है । आप वरणीय तथा सब कुछ जाननेवाले हैं, आभूषणके रूपमें आप सर्पका कंकण धारण करते हैं । आप भगवान विष्णुको प्रिय (या विष्णुके प्रिय) हैं, आप गणाध्यक्ष, दक्ष तथा शरणागतोंको विपत्तियोंका नाश करनेवाले हैं, आपको मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ७॥

गुणातीतं शम्भुं बुधगणमुखोद्गीतयशसं
विरूपाक्षं देवं धनपतिसखं वेदविनुतम् ।
विभुं नत्वा याचे भवतु भवतः श्रीचरणयो-
र्विशुद्धा सद्भक्तिः परमपुरुषस्यादिविदुषः ॥ ८॥

हे विरूपाक्ष (त्रिनयन) भगवान शिव! आप प्रकृतिके गुणोंसे अतीत हैं । आपके यशका गान विद्वज्जन किया करते हैं तथा वेदोंके द्वारा आपकी स्तुति की गयी है । आप कुबेरके मित्र और व्यापक हैं, आपको प्रणाम करके मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि परम पुरुष और आदि विद्वान आपके श्रीचरणोंमें मेरी विशुद्ध सद्भक्ति बनी रहे ॥ ८॥

शङ्करे यो मनः कृत्वा पठेच्छ्रीशङ्कराष्टकम् ।
प्रीतस्तस्मै महादेवो ददाति सकलेप्सितम् ॥ ९॥

भगवान शंकरमें चित्त लगाकर जो इस ऽ श्रीशिवाष्टकऽ का

पाठ करेगा, उसपर वे प्रसन्न होंगे और उसको समस्त
कामनाओंको पूर्ण कर देंगे ॥ ९॥

॥ इति श्रीशिवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ इस प्रकार श्रीशिवाष्टक सम्पूर्ण हुआ ॥

म्हारे घर रमतो जोगिया तू आव ।
कानाँ बिच कुंडल, गले बिच सेली, अंग भभूत रमाय ॥

तुम देख्याँ बिण कल न परत है, ग्रिह अंगणो न सुहाय ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, दरसन दौ ण मोकूँ आय ॥

(मीराँ-पदावली)

Proofread by Ganesh Kandu

Shri Shivashtakam 5

pdf was typeset on November 22, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*